अध्याय 34

परमेश्वर के बारे में एलीहू के विचार (भाग 2)

अध्याय 34 में एलीहू ने अय्यूब द्वारा परमेश्वर के चरित्र और सम्मान पर लगाए अय्यूब के आरोप का बचाव किया। पहले उसने बुद्धिमानों से वह चुनने का आग्रह किया जो सही है (34:1–9)। फिर उसने घोषणा की कि परमेश्वर दुष्टता से काम नहीं करेगा (34:10–15)। उसने माना कि परमेश्वर पक्षपाती नहीं है (34:16–20) और फिर उसे सबसे समझदार भी बताया (34:21–30)। अंत में उसने अय्यूब पर अपनी बात में विद्रोह को मिला लेने का आरोप लगाया (34:31–37)। एस. एस. रोअले ने कहा है,

> अय्यूब की विशेष परिस्थिति को अनदेखा करते रहकर वह आम परिस्थितियों की बात करता है जबकि अय्यूब ने विशेष से सामान्य अर्थात उसके अपने मामले से परमेश्वर के व्यवहार का तर्क दिया था और फिर अपने आस पास के अन्य लोगों द्वारा अन्याय किए जाने की पुष्टि की थी, पर एलीहू अपनी धर्म शिक्षा की अवहानण की बात करता है। एलीहू अय्यूब के पाप का निष्कर्ष निकालता है।[1]

''जो सही है वह चुनो'' (34:1–9)

[1]फिर एलीहू यों कहता गया, [2]''हे बुद्धिमानो! मेरी बातें सुनो, और हे ज्ञानियो! मेरी बातों पर कान लगाओ; [3]क्योंकि जैसे जीभ से चखा जाता है, वैसे ही वचन कान से परखे जाते हैं। [4]जो कुछ ठीक है, हम अपने लिये चुन लें; जो भला है, हम आपस में समझ बूझ लें। [5]क्योंकि अय्यूब ने कहा है, 'मैं निर्दोष हूँ, और परमेश्वर ने मेरा हक़ मार दिया है। [6]यद्यपि मैं सच्चाई पर हूँ, तौभी झूठा ठहरता हूँ, मैं निरपराध हूँ, परन्तु मेरा घाव असाध्य है।' [7]अय्यूब के तुल्य कौन शूरवीर है, जो परमेश्वर की निन्दा पानी के समान पीता है, [8]जो अनर्थ करनेवालों का साथ देता, और दुष्ट मनुष्यों की संगति रखता है? [9]क्योंकि उसने कहा है, 'मनुष्य को इससे कुछ लाभ नहीं कि वह आनन्द से परमेश्वर की संगति रखे।'''

आयत 1. अय्यूब ने कोई उत्तर नहीं दिया था (33:32, 33), इसलिए **एलीहू** अपना उपदेश **कहता गया**। यह जवान जिसके ''मन में बातें'' भरी थी बहुत कुछ कहना चाहता था (32:18)

आयत 2. कुछ लोग एलीहू द्वारा **बुद्धिमानों** अय्यूब तथा तीन मित्रों के लिए कहा गया मानते हैं।[2] यदि ऐसा है तो यह पदनाम अय्यूब की पुस्तक की विडम्बना का उदाहरण हैं। ''ताना ऐसे शब्दों का इस्तेमाल है जो शब्दों के मूल अर्थ के उलट अर्थ देने के ईरादे से दिए गए हैं।''[3] परन्तु ''बुद्धिमानों'' के भाषणों को सुनने के लिए इकट्ठा हुई बड़ी भीड़ को भी कहा गया हो

सकता है। यह दूसरा वाला विचार सही लगता है क्योंकि एलीहू पूरे अध्याय में बुद्धिमानों से विचार करता रहा (34:10, 34)।

आयत 3. ''क्योंकि जैसे जीभ से चखा जाता है, वैसे ही वचन कान से परखे जाते हैं।'' यह लगभग वैसा ही है जैसा अय्यूब ने 12:11 में पूछा था: ''जैसे जीभ से भोजन चखा जाता है, क्या वैसे ही कान से वचन नहीं परखे जाते?'' इन दोनों जगहों में कहीं जाने वाली बात का अर्थ यही है। जिस प्रकार से हम अपनी स्वाद तंत्रिकाओं से अच्छे और बुरे खाने में अंतर कर सकते हैं वैसे ही हमारे कान समझदारी और न समझी की बातें, सच और झूठ में अंतर कर सकते हैं।

आयत 4. ''जो कुछ ठीक है, हम अपने लिये चुन लें।'' क्रिया शब्द ''चुन लें'' (*bachar, बाचार*) तथ्यों की सावधानीपूर्वक जांच और समीक्षा के बाद निर्णय लेने के लिए है। ''*ठीक* [*mishpat, मिशपैट*] उसके लिए इस्तेमाल होता है जो कानूनी तौर पर सही हो और *भला* [*tob, टोब*] उसके लिए जो नैतिक रूप में सही हो।''[4]

आयतें 5, 6. एक बार फिर एलीहू अय्यूब को उद्धृत करते हुए अपनी चर्चा को आरम्भ करने लगा। इस बार उसने अय्यूब की शिकायत को संक्षेप में बताया। **अय्यूब** ने दावा किया था कि वह **निर्दोष** था (*tsadaq, सादाक़*; 9:15, 20; 10:15; 13:18) और जिस बात का एलीहू को पता नहीं था, परमेश्वर ने यह घोषित किया था कि अय्यूब ''खरा और सीधा'' है (1:8; 2:3)। अय्यूब का **हक्क** (*mishpat, मिशपाट*) उसके मुकद्दमे के ''न्याय'' के लिए कहा गया है जो उसके तर्कों की मान्यता और सच्चाई को दिखाता है (9:19; 13:18; 19:7; 23:4; 27:2)।

''यद्यपि मैं सच्चाई पर हूँ, तौभी झूठा ठहरता हूँ।'' NIV में है ''चाहे मैं सही हूं, पर मुझे झूठा माना जाता है।'' (NASB में इसे प्रश्न के रूप में लिखा गया है, ''क्या मैं अपने हक्क के बारे में झूठ बोलूं?'' – अनुवादक।) अय्यूब का मानना था कि ''परमेश्वर ने ही उसके विरुद्ध गवाही देने के लिए उसे रोगी बनाया था, निर्दोष होने के उसके अपने दावों के उलट अधिक शोर मचाते हुए बोलकर (16:8; 10:17; तुलना 19:19–21)।''[5]

मेरा घाव असाध्य है अय्यूब के परमेश्वर द्वारा उस पर आक्रमण करने के वर्णन का स्मरण दिलाता है (16:9–14; 19:7–12)। **अपराध** (*pesha', पेशा*) का बेहतर अनुवाद ''विद्रोह'' होना था। एलीहू ने अय्यूब को बिल्कुल सही पेश किया, चाहे अय्यूब ने बिल्कुल ऐसा नहीं कहा था।

आयतें 7, 8. ''अय्यूब के तुल्य कौन शूरवीर है, जो परमेश्वर की निन्दा पानी के समान पीता है,'' एलीहू द्वारा अब तक लगाए गए आरोपों में से सबसे कठोर यही है। ''परमेश्वर की निंदा'' (*la'ag, लाग*) ''ठट्ठा उड़ाने'' के अर्थ में है और यह परमेश्वर की निंदा के समान था।[6] पहले एक भाषण में एलीपज ने अय्यूब पर ''कुटिलता को पानी के समान पीने'' का आरोप लगाया था (15:16)। यहां पर एलीहू निश्चय ही अय्यूब पर धार्मिक और नैतिक सच्चाइयों का मज़ाक उड़ाने का आरोप लगा रहा था। जो उसे और उसके तीन मित्रों द्वारा किया जा रहा था।

''जो अनर्थ करनेवालों का साथ देता, और दुष्ट मनुष्यों की संगति रखता है?'' एलीहू के आरोप का तात्पर्य यह था कि अय्यूब दुष्टों के जैसा ही हो गया था। भजन लिखने वाले ने ऐसी संगतियों के विरुद्ध चेतावनी दी:

क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है! परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है।।दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते, वे उस भूसी के समान होते हैं, जो पवन से उड़ाई जाती है। इस कारण दुष्ट लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे, और न पापी धर्मियों की मण्डली में ठहरेंगे; क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग नाश हो जाएगा। (भजन संहिता 1:1-6)।

आयत 9. ''क्योंकि उसने कहा है, 'मनुष्य को इससे कुछ लाभ नहीं कि वह आनन्द से परमेश्वर की संगति रखे।''' अंतिम भाग को इस प्रकार से लिखा जा सकता है कि ''वह परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास करे'' (NIV)। यह आयत अय्यूब के शब्दों को हू-ब-हू शब्द नहीं हैं परन्तु उसके विचार को दिखा सकते हैं। 9:22-24 में अय्यूब ने कहा कि खरे और दुष्ट दोनों का होता है। 21:7-13 में उसने दावा कि दुष्ट लोग सचमुच में सफल होते हैं।

''परमेश्वर दुष्टता का काम नहीं करता'' (34:10-15)

अगले पद्य परमेश्वर के उस आदर की रक्षा करते हैं जिसे एलीहू को लगा कि अय्यूब ने खण्डन किया है। रॉबर्ट एल. आल्डन ने टिप्पणी की है, ''कुल मिलाकर जो कुछ एलीहू ने कहा वह एक अच्छी थियोलॉजी थी, परन्तु आश्चर्य होता कि यह सभी हवाले दुष्टों, बुराई करने वालों के लिए हैं और कंगालों पर अत्याचार करने वाले अय्यूब के संकेतों में छिपे हुए नहीं हैं।''[7]

[10]''इसलिये हे समझवालो! मेरी सुनो, यह सम्भव नहीं कि परमेश्वर दुष्टता का काम करे, और सर्वशक्तिमान बुराई करे। [11]वह मनुष्य की करनी का फल देता है, और प्रत्येक को अपनी अपनी चाल का फल भुगताता है। [12]निःसन्देह परमेश्वर दुष्टता नहीं करता और न सर्वशक्तिमान अन्याय करता है। [13]किसने पृथ्वी को उसके हाथ में सौंप दिया? या किसने सारे जगत का प्रबन्ध किया? [14]यदि वह मनुष्य से अपना मन हटाये और अपना आत्मा और श्वास अपने ही में समेट ले, [15]तो सब देहधारी एक संग नष्ट हो जाएँगे, और मनुष्य फिर मिट्टी में मिल जाएगा।''

आयत 10. इसलिए संकेत देता है कि एलीहू अय्यूब के तर्कों से (34:5, 6, 9) उसकी अपनी धारणाओं की ओर मुड़ गया है। **हे समझ वालो** उन समझदारों को कहा गया है जिनसे एलीहू ने पहले बात की थी (34:2 पर टिप्पणियां देखें)।

''यह सम्भव नहीं कि परमेश्वर दुष्टता का काम करे, और सर्वशक्तिमान बुराई करे।'' अपने आप में प्रमाणित इस सच्चाई को पुराने नियम के कई पात्रों द्वारा बताया गया था। अब्राहम ने कहा, ''इस प्रकार का काम करना तुझ से दूर रहे कि दुष्ट के संग धर्मी को भी मार डाले और धर्मी और दुष्ट दोनों की एक ही दशा हो। यह तुझ से दूर रहे। क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे'' (उत्पत्ति 18:25)। मूसा ने पुकारकर कहा, ''वह चट्टान है, उसका काम

खरा है; और उसकी सारी गति न्याय की है। वह सच्चा ईश्वर है, उस में कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है'' (व्यवस्थाविवरण 32:4)। यहोशापात ने कहा, ''अब यहोवा का भय तुम में बना रहे; चौकसी से काम करना, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा में कुछ कुटिलता नहीं है, और न वह किसी का पक्ष करता और न घूस लेता है'' (2 इतिहास 19:7)। बिलदद ने नकारात्मक प्रश्न पूछा था, ''क्या ईश्वर अन्याय करता है? और क्या सर्वशक्तिमान धर्म को उलटा करता है?'' (अय्यूब 8:3)। निश्चय ही परमेश्वर के पूर्णतया धर्मी होने का नियम उसके किसी भी प्रकार से ''गलत'' करने को नकारता है।

आयत 11. ''वह मनुष्य की करनी का फल देता है, और प्रत्येक को अपनी अपनी चाल का फल भुगताता है।'' ''चाल'' शब्द व्यक्ति के आचरण या जीने के ढंग के लिए इस्तेमाल हुआ है। मित्रों की तरह एलीहू का मानना था कि इस जीवन में आने वाले दु:ख परमेश्वर के न्याय का सीधा प्रमाण हैं। सचमुच में परमेश्वर ''हर एक को उसके कामों के अनुसार फल देगा'' (मत्ती 16:27; देखें रोमियों 2:6)। परन्तु सच्चाई यह है कि पाप के सारे परिणाम व्यक्ति को इसी जीवनकाल में नहीं मिल जाते हैं। इसके अलावा इस जीवन में अच्छे लोगों के साथ बुरी बातें होती हैं और इसका अर्थ यह नहीं समझा जाना चाहिए कि वे बहुत बड़े पापी हैं।

आयत 12. ''नि:सन्देह परमेश्वर दुष्टता नहीं करता और न सर्वशक्तिमान अन्याय करता है।'' जॉन ई. हार्टले ने बताया है कि ''इस शिक्षा का अर्थ यह है कि व्यक्ति जो भी दुख भोगता है वह उसका हक्कदार होता है। कोई अपवाद नहीं है क्योंकि परमेश्वर कोई गलती नहीं करता।''[8] एलीहू के लिए यह नियम इतना महत्वपूर्ण था कि उसने इसे दोहराया और वह इसी को मानता था।

आयत 13. ''किसने पृथ्वी को उसके हाथ में सौंप दिया? या किसने सारे जगत का प्रबन्ध किया?'' अलंकारिक प्रश्नों का इस्तेमाल करते हुए एलीहू ने ''सारे जगत'' के ऊपर परमेश्वर की प्रभुता का ज़ोर दिया। इन दोनों प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर है, ''कोई नहीं!'' ''पृथ्वी उसके हाथ में है'' यानी परमेश्वर के अधीन है इसलिए किसी को उसके निर्णयों को चुनौती देने का अधिकार नहीं है। यहोवा के भाषणों में इस विचार को और विस्तार दिया गया है (38:1-41:34)।

आयतें 14, 15. यदि परमेश्वर **अपना श्वास** खींच लेने का निर्णय कर ले तो सारी मनुष्य जाति मिट जाएगी (देखें 12:10; 27:3; 33:4)। पृथ्वी पर **सब देहधारी एक संग नष्ट हो जाएंगे**, जैसे जल प्रलय में दुष्टों का नाश हुआ था (उत्पत्ति 7:21-23)। **मनुष्य फिर मिट्टी में मिल जाएगा** जहां से वह आया था (देखें 7:21; 10:9; 17:16; 20:11; 21:26)। जीवन और मृत्यु पर अधिकार परमेश्वर के पास है इसलिए जब कोई परमेश्वर को चुनौती देता है तो वह खतरनाक ज़मीन पर चल रहा होता।

''परमेश्वर निष्पक्ष है'' (34:16-20)

16''यदि तुझ में समझ है, तो यह सुन; और मेरी इन बातों पर कान लगा। 17जो न्याय का बैरी हो, क्या वह शासन करे? जो पूर्ण धर्मी है, क्या तू उसे दुष्ट ठहराएगा? 18वह राजा

से कहता है, 'तू नीच है'; और प्रधानों से, 'तुम दुष्ट हो'। [19]परमेश्वर हाकिमों का पक्ष नहीं करता और धनी और कंगाल दोनों को अपने बनाए हुए जानकर उनमें कुछ भेद नहीं करता। [20]आधी रात को पल भर में वे मर जाते हैं, और प्रजा के लोग हिलाए जाते और जाते रहते हैं; और प्रतापी लोग बिना हाथ लगाए उठा लिए जाते हैं।''

आयत 16. एलीहू ने चाहे पहले ''हे बुद्धिमानो'' (34:2) और ''हे समझ वालो'' (34:10) कहकर सम्बोधित किया था, परन्तु एकवचन सर्वनाम **तुच्छ** संकेत देता है कि उसने अपना ध्यान एक ही आदमी पर संकुचित कर लिया था। एलीहू ने अय्यूब से **समझ** पाने के लिए कहा कि उसकी **बातों पर कान लगा**ए।

आयत 17. ''जो न्याय का बैरी हो, क्या वह शासन करे? जो पूर्ण धर्मी है, क्या तू उसे दुष्ट ठहराएगा?'' इन प्रश्नों में एक नकारात्मक प्रश्न का अनुमान है। अय्यूब ने परमेश्वर द्वारा संसार के संचालन के बारे में कुछ कठोर बातें कहीं थीं (9:13–24)। ऐसा उसने अपनी पीड़ा के अत्यधिक दबाव तथा मित्रों के आरोपों के कारण कहा था, परन्तु अय्यूब ने परमेश्वर पर घृणापूर्व न्याय करने का आरोप नहीं लगाया था।

आयतें 18, 19. राजा की दीन हीन प्रजा उससे **नीच** जैसे नाम देकर उसे गाली देने की हिम्मत नहीं करेगी, न ही उसके **प्रधानों** को **दुष्ट** कहा जाएगा। परन्तु परमेश्वर किसी के साथ पक्षपात नहीं दिखाता है। वह किसी की दौलत, रूतबे या पदवी की परवाह किए बिना निष्पक्षता से न्याय करता है (गलातियों 2:6; इफिसियों 6:9) और दूसरों से भी ऐसा ही चाहता है (व्यवस्थाविवरण 1:17; याकूब 2:1–9)। यह सच है क्योंकि वे सब उसके **अपने बनाए हुए** हैं।

आयत 20. धनवान हों या निर्धन, प्रधान हों या प्रजा, बलवान हों या निर्बल सब अचानक **मर जाते हैं। बिना हाथ लगाए** वाक्यांश की व्याख्या TEV में ''बिना किसी प्रयास के'' अर्थ देने के लिए की गई है (देखें NJB)। यह तथ्य कि आयत 19 में परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य के सम्बन्ध में उसके ''हाथों'' (NASB का उल्लेख इस व्याख्या का समर्थन करता है) अन्य संस्करणों में इस वाक्यांश का अनुवाद ''बिना *मानवीय* हाथ'' के हुआ है (देखें NIV; NRSV; NJPSV; NLT)। पवित्र शास्त्र में और जगह ऐसे ही वाक्यांशों का अर्थ यही है (दानिय्येल 2:34; 8:25)। यह अनुवाद इस बात का संकेत देता है कि तानाशाहों की मृत्यु बिना किसी मनुष्य के कार्य के परमेश्वर का स्पष्ट न्याय होता है।

''परमेश्वर अंतरयामी है'' (34:21–30)

[21]''क्योंकि परमेश्वर की आँखें मनुष्य की चालचलन पर लगी रहती हैं, और वह उसकी सारी चाल को देखता रहता है। [22]ऐसा अन्धियारा या घोर अन्धकार कहीं नहीं है जिस में अनर्थ करनेवाले छिप सकें। [23]क्योंकि उसने मनुष्य का कोई समय नहीं ठहराया कि वह परमेश्वर के सम्मुख अदालत में जाए। [24]वह बड़े बड़े बलवानों को बिना पूछपाछ के चूर चूर करता है, और उनके स्थान पर दूसरों को खड़ा कर देता है। [25]इसलिये कि वह उनके कामों को भली भाँति जानता है, वह उन्हें रात में ऐसा उलट देता है कि वे चूर चूर हो जाते हैं।

[26]वह उन्हें दुष्ट जानकर सभों के देखते मारता है, [27]क्योंकि उन्होंने उसके पीछे चलना छोड़ दिया है, और उसके किसी मार्ग पर चित्त न लगाया, [28]यहाँ तक कि उनके कारण कंगालों की दोहाई उस तक पहुँची और उसने दीन लोगों की दोहाई सुनी। [29]जब वह चुप रहता है तो उसे कौन दोषी ठहरा सकता है? जब वह मुँह फेर ले, तब कौन उसका दर्शन पा सकता है? जाति भर के साथ और अकेले मनुष्य, दोनों के साथ उसका बराबर का व्यवहार है [30]ताकि भक्तिहीन राज्य करता न रहे, और प्रजा फन्दे में फँसाई न जाए।''

आयत 21. ''क्योंकि परमेश्वर की आँखें मनुष्य की चालचलन पर लगी रहती हैं, और वह उसकी सारी चाल को देखता रहता है।'' एक पुराने भजन में इस आयत के विचार को इस पंक्ति के साथ अच्छा व्यक्त किया गया है ''सब कुछ देखने वाली आंख तुम्हें देख रही है।''[9] अय्यूब ने परमेश्वर से कहा था, ''क्या वह मेरी गति नहीं देखता और क्या वह मेरे पग-पग नहीं गिनता?'' (31:4)। इब्रानियों के लेखक ने पुष्टि की है, ''सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और प्रगट हैं'' (इब्रानियों 4:13)। सेमुएल कॉक्स ने यह गहरी बात कही:

> मानवीय न्यायी अन्याय कर सकते हैं चाहे उनमें से अधिकतर का ईरादा न्याय करने का ही हो। क्योंकि वे मनुष्य के सब चाल चलन को नहीं जान सकते या ''उसकी *सारी* चाल'' पर नज़र नहीं रख सकते; और यदि वे उसके सब कामों से अपने आपको परिचित भी करवा सकते हों तो वे उन ईरादों के अंदर तक नहीं झाक सकते जिनसे उन्हें प्रेरणा मिली और उन्हें नैतिक रंग और महत्व दिया। निष्पक्ष निर्णय पक्षपाती जानकारी से नहीं दिया जा सकता, परन्तु मनुष्यों के सर्वोच्च अधिकारी का ज्ञान अधूरा नहीं है; वह यानी वह अंतरयामी है और उसका अंतरयामी होना उसके निष्पक्ष होने का एक नया तर्क और गारंटी है।[10]

आयत 22. बुराई करने वालों के लिए अंधकार वाली कोई ऐसी जगह नहीं है जहां से वे परमेश्वर से **छिप सकें**। पुस्तक में **अंधियारा** (*choshek, चोशेक*) और **घोर अंधकार** (*tsalmaweth, साल्मावेथ*) को अन्य जगहों पर मिलाया गया है (3:5; 10:21; 12:22; 28:3)।

आयत 23. ''क्योंकि उसने मनुष्य का कोई समय नहीं ठहराया कि वह परमेश्वर के सम्मुख अदालत में जाए।'' आल्डन ने बताया, ''मतलब यह कि लोग इससे बढ़कर दोषी हैं। मुकद्दमें की कोई आवश्यकता नहीं है। यह तो स्पष्ट मामला है। ईश्वरीय न्याय का मन बन चुका है। दुष्ट लोग दोषी हैं।''[11]

आयतें 24, 25. परमेश्वर द्वारा **बड़े बड़े बलवानों** का जो दुष्ट हैं न्याय और दण्ड पक्का जल्द होने वाला पूरा है। उन्हें नष्ट करके **चूर चूर** कर दिया जाता है और उनकी जगह **दूसरों** को दी जाती है। सब कुछ जानने वाला होने के कारण परमेश्वर को **पूछपाछ** या जांच की आवश्यकता नहीं होती।

आयत 26. ''वह उन्हें दुष्ट जानकर सभों के देखते मारता है।'' क्रिया शब्द ''मारता है'' (*sapaq, सापाक़*) का अर्थ आम तौर पर ''ताली'' (34:37) या ''थप्पड़''[12] होता है किसी

को ''सभों के देखते'' ''थप्पड़'' मारना या ''मारना'' उसके लिए अपमान और शर्म की बात होनी थी (1 राजाओं 22:24; मत्ती 5:39; 26:67; 2 कुरिन्थियों 11:20)। अय्यूब चाहे निर्दोष था पर इस प्रकार से व्यवहार किए जाने के लिए उसका वर्णन फिर से किया गया है: ''लोग मुझ पर मुंह पसारते हैं, और मेरी नामधराई करके मेरे गाल पर थप्पड़ मारते, और मेरे विरुद्ध भीड़ लगाते हैं'' (16:10)।

आयतें 27, 28. दुष्टों का अपमान ओर दण्ड उचित था क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को **किसी मार्ग पर चित्त न लगाया** था। ''चित्त लगाया'' (*śakal, साकाल*) शब्द पूरी पहचान और ज्ञान पाने के लिए सावधानीपर्वूक ध्यान देने को दर्शाता है। दुष्टों को दण्ड दिया जाना सही था क्योंकि वे कंगालों को सताते थे। परमेश्वर **कंगालों की दोहाई** को सुनता है और **दीन लोगों की दोहाई** को सुनता है और उन्हें बचाने के लिए आता है (निर्गमन 3:7; व्यवस्थाविवरण 15:9; 24:15; 2 शमूएल 22:7)।

आयत 29. ''जब वह चुप रहता है तो उसे कौन दोषी ठहरा सकता है? जब वह मुँह फेर ले, तब कौन उसका दर्शन पा सकता है? जाति भर के साथ और अकेले मनुष्य, दोनों के साथ उसका बराबर का व्यवहार है?'' इस आयत के सही सही अनुवाद और अर्थ पर विवाद है। उदाहरण के लिए ''वह चुप रहता है'' के बजाय NKJV में ''वह शांति देता है'' है। इन अलग-अलग अनुवादों के अधार पर, रोअले ने दो मुमकिन व्याख्याएं दी हैं: (1) ''यदि परमेश्वर चुप रहता है ... और दुष्टों को दण्ड देने के लिए हस्तक्षेप नहीं करता है, तो उस पर दोष लगाने का किसी को कोई अधिकार नहीं है''; या (2) ''परमेश्वर जब निरंकुश शासन से विराम देता है, तो अन्याय के लिए उस पर दोष न लगाया जाए।''[13]

अय्यूब ने परमेश्वर से पूछा था, ''तू किस कारण अपना मुंह फेर लेता है और मुझे अपना शत्रु गिनता है?'' (13:24)। वह बड़ी शिद्दत से परमेश्वर से मुलाकात करना चाहता था पर हर दिशा में खोज लेने के बाद वह उसे ''दिखाई नहीं'' पड़ा (23:8, 9)। अय्यूब ने यह भी पूछा था कि परमेश्वर ने कंगालों को चिल्लाने और दबे कुचले हुओं की आवाज को अनसुनी क्यों करता है (24:1-12)।

आयत 30. ''ताकि भक्तिहीन राज्य करता न रहे, और प्रजा फन्दे में फँसाई न जाए।'' यदि ऐसे भक्तिहीन लोगों को लम्बे समय तक ''राज्य'' करने दिया जाता तो उन्होंने अपनी प्रजा को ''फंदे में फंसा'' लेना था। ''फंदे में फंसा'' (*moqesh, मो.केश*) शब्द पंछियों को जाल में फंसाने के लिए लगाया गया ''चारा'' या ''प्रलोभन'' भी हो सकता है; यहां इस शब्द का इस्तेमाल प्रतीकात्मक रूप में उन लोगों के लिए किया गया है जो ''लोगों'' के पतन का कारण बन सकते हैं।[14]

''अय्यूब अपने पाप में विद्रोह को जोड़ देता है'' (34:31-37)

31''क्या किसी ने कभी परमेश्वर से कहा, 'मैं ने दण्ड सहा, अब मैं भविष्य में बुराई न करूँगा, 32जो कुछ मुझे नहीं सूझता, वह तू मुझे सिखा दे; और यदि मैं ने टेढ़ा काम किया हो, तो भविष्य में वैसा न करूँगा?' 33क्या वह तेरे ही मन के अनुसार बदला पाए क्योंकि तू उससे अप्रसन्न है? क्योंकि तुझे निर्णय करना है, न कि मुझे; इस कारण जो कुछ तुझे

मालूम है, वह कह दे। [34]सब ज्ञानी पुरुष वरन् जितने बुद्धिमान मेरी सुनते हैं वे मुझ से कहेंगे, [35]'अय्यूब ज्ञान की बातें नहीं कहता, और न उसके वचन समझ के साथ होते हैं।' [36]भला होता, कि अय्यूब अन्त तक परीक्षा में रहता, क्योंकि उस ने अनर्थियों के से उत्तर दिए हैं। [37]क्योंकि वह अपने पाप के साथ-साथ विद्रोह भी बढ़ाता है; और हमारे बीच ताली बजाता है, और परमेश्वर के विरुद्ध बहुत सी बातें कहता है।''

आयतें 31, 32. दण्ड शब्द मूल भाषा में नहीं है। परन्तु अर्थ को पूरा करने के लिए ऐसा कोई शब्द जोड़ना आवयश्क है। **बुराई** (*chabal, चाबाल*) करने का अर्थ ''भ्रष्ट तरीके से काम'' करना है।[15] एलीहू अय्यूब से कह रहा था ''उस गलती को मान ले जिसके लिए उसे दण्ड दिया जा रहा है और ऐसी गलती दोबारा न करने की कसम खाए।'';[16]

आयत 33. ''क्या वह तेरे ही मन के अनुसार बदला पाए क्योंकि तू उससे अप्रसन्न है?'' NIV में इस प्रश्न को अधिक स्पष्टता से कहा गया है: ''क्या परमेश्वर तुझे तेरी शर्तों के अनुसार प्रतिफल दे, जब कि तू मन फिराने से इनकार करता है?'' एलीहू ने अय्यूब से परमेश्वर के अधीन हो जाने का **निर्णय** लेने को कहा, बिल्कुल वैसे जैसे एलीपज ने किया था (22:21-30)। फिर एलीहू ने अय्यूब से जवाब मांगा पर उसने जवाब नहीं दिया।

आयतें 34, 35. अय्यूब तथा मित्रों के बीच अधिकतर ब्हस उसी पर थी जो उनमें से हर किसी को पता था या नहीं। जैसा कि *परिचय* में बताया गया है, अय्यूब की पुस्तक को समझने की कुंजी इसके बीच मिलने वाले **ज्ञान** की अवधारणा पर टिकी है। होमेर हेली ने कहा है, ''ज्ञान सम्भवतया अनुभव परमेश्वर और उसके मार्गों के ज्ञान से प्राप्त निजी ज्ञान था।''[17]

आयतें 36, 37. एलीहू का मानना था कि अय्यूब में ज्ञान की कमी है, इस कारण वह अय्यूब की बातों को **परमेश्वर के विरुद्ध ... विद्रोह** के चिह्न मानता था। उसने अय्यूब पर ठट्ठा करने का आरोप भी लगाया: **वह हमारे बीच ताली बजाता है** (देखें 27:23; विलापगीत 2:15)। इस आकलन के प्रकाश में, एलीहू का मानना था कि अय्यूब को अंत **तक परीक्षा में रह**ना चाहिए। ''परीक्षा में रहता,'' *bachan* (*बाचान*), से लिया गया है जिसका अर्थ है ''जांचना'' या ''परखना।''[18] इस संदर्भ में इसमें दु:ख सहने का विचार मिलता है (23:10 पर टिप्पणियां देखें)। ''अंत तक परीक्षा में रहता'' के बजाय NLT में है ''अधिकतर दण्ड का हक्कदार'' और CEV में कहा गया है, ''जितना हो सके दु:ख उठा।'' आल्डन ने लिखा है, ''जिस शालीनता से एलीहू ने अपने भषणों का आरम्भ किया था वह कम हो गई है और वह अन्य तीन लोगों की तरह ही झगड़ालू और क्रूर हो गया लगता है।''[19]

प्रासंगिकता

परमेश्वर का स्वभाव (अध्याय 34)

इस अध्याय के आरम्भिक और अंतिम पद्यों में एलीहू अय्यूब के साथ अनावश्यक रूप में कठोर था। आरम्भिक पद्यों में उसने पूछा, ''अय्यूब के तुल्य कौन शूरवीर है, जो परमेश्वर की निन्दा को पानी के समान पीता है, जो अनर्थ करनेवालों का साथ देता, और दुष्ट मनुष्यों की संगति रखता है?'' (34:7, 8)। अंतिम पद्य में एलीहू ने कहा, ''अय्यूब ज्ञान की बातें नहीं कहता, और

न उसके वचन समझ के साथ होते हैं'' (34:35)। सम्भवतया अय्यूब इतना बड़ा पापी नहीं था जितना एलीहू और उसके मित्र बता रहे थे। अय्यूब के विषय में एलीहू की बातें भी अय्यूब के बारे में गलत थीं पर जो कुछ उसने परमेश्वर के बारे में कहा वह आम तौर पर सच था। उसने परमेश्वर की तीन खूबियां बताईं।

परमेश्वर धर्मी है (34:10–15)। एलीहू ने घोषणा की, ''यह सम्भव नहीं कि ईश्वर दुष्टता का काम करे, और सर्वशक्तिमान बुराई करे'' (34:10)। अन्य शब्दों में परमेश्वर अपने धर्मी स्वभाव के अनुसार ही काम करता है। बाइबल में कई और लोगों ने ऐसी ही बातें कहीं (34:10 पर टिप्पणियां देखें)। उन्हें इस बात की समझ थी कि परमेश्वर का पूर्ण से धर्मी होना उसे किसी भी गलत काम को करने से रोकता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर सच्चाई का परमेश्वर है, इस कारण उसके लिए झूठ बोलना नामुमकिन है (इब्रानियों 6:18)।

परमेश्वर के सम्बन्ध में एलीहू ने भी कहा, ''वह मनुष्य की करनी का फल देता है, और प्रत्येक को अपनी–अपनी चाल का फल भुगताता है'' (34:11)। परमेश्वर अपने निर्णयों में धर्मी है। एलीहू तथा मित्रों की सोच की समस्या यह है कि उनकी सोच इस जीवनकाल तक सीमित है। उनकी सोच के विपरीत, इस जीवन का हर दु:ख व्यक्तिगत पाप का परिणाम नहीं है। इसके अलावा बहुत से दुष्ट लोग हैं जिन्हें अपने बुरे कामों के लिए इस जीवन में कभी दण्ड नहीं मिलता।

मसीही होने के नाते हमें इस बात की समझ है कि जब यीशु वापस आएगा तो वह धर्म से जगत का न्याय करेगा। पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वार किया हों पाए'' (2 कुरिन्थियों 5:10)। परमेश्वर धर्मियों को प्रतिफल और दुष्टों को सदाकाल का दण्ड देगा। ''इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23), इस कारण परमेश्वर के इस अनुग्रह को जो उसने यीशु मसीह के द्वारा हमें दिया है स्वीकार करना बिल्कुल जरूरी है। यीशु ने हमारे पापों का प्रायश्चित बनकर परमेश्वर के धर्मी क्रोध को शांत किया है (रोमियों 3:24, 25)। क्रूस पर उसकी मृत्यु परमेश्वर की धार्मिकता का प्रदर्शन है, ''जिससे वह [परमेश्वर] आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो'' (रोमियों 3:26)। ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' (2 कुरिन्थियों 5:21)।

परमेश्वर पक्षपात रहित है (34:16–20)। एलीहू ने परमेश्वर के लिए कहा कि वह ''हाकिमों का पक्ष नहीं करता और धनी और कंगाल दोनों को अपने बनाए हुए जानकर उनमें कुछ भेद नहीं करता'' (34:19)। पौलुस ने इसी विचार को बताया: ''परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता'' (गलातियों 2:6), और ''वह किसी का पक्ष नहीं करता'' (इफिसियों 6:9)। परमेश्वर किसी के सामाजिक रूतबे, जातीय पृष्टिभूमि या आर्थिक स्थिति की परवाह नहीं करता। वह केवल आज्ञाकारिता की परवाह करता है।

पतरस तक यह संदेश पहुंचाने के लिए परमेश्वर की ओर से आश्चर्यजनक दर्शन तथा रोमी सूबेदार की ओर से दूतों के एक समूह की आवश्यकता पड़ी फिर वह मसीह के उद्धार के संदेश को सुनाने के लिए एक अन्यजाति कुरनेलियुस के घर में गया। उसने अपना उपदेश यह कहते

हुए आरम्भ किया ''तब पतरस ने कहा, अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म केकाम करता है, वह उसे भाता है'' (प्रेरितों 10:34, 35)। गलातियों 3:28, 29 में पौलुस ने समझाया:

> अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतन्त्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।

परमेश्वर अंतरयामी है (34:21–30)। एलीहू ने कहा, ''क्योंकि परमेश्वर की आँखें मनुष्य की चालचलन पर लगी रहती हैं, और वह उसकी सारी चाल को देखता रहता है'' (34:21)। इस विचार से कि परमेश्वर सब कुछ जानता है लोगों की अलग-अलग प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं। उसके विरुद्ध विद्रोह करते रहने वालों के लिए इससे भय उत्पन्न हो सकता है। परमेश्वर की सेवा करने वालों के लिए उसका अंतरयामी होना उन्हें पुनः आश्वासन और शांति दिला सकता है। भजन लिखने वाले को इससे शांति ही मिली:

> हे यहोवा, तू ने मुझे जांच कर जान लिया है। तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है। मेरे चलने और लेटने की तू भली भांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है। हे यहोवा, मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो। तू ने मुझे आगे पीछे घेर रखा है, और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है। यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है; यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है (भजन संहिता 139:1-6)।

एलीहू ने आगे कहा कि परमेश्वर से कोई छुप नहीं सकता है (34:22)। इब्रानियों के लेखक ने इसे इस प्रकार से कहा: ''सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और प्रगट हैं'' (इब्रानियों 4:13; NIV)। वह हमारे हर विचार को और हमारे हर काम को जानता है। वह जानता है कि हमारे मन निष्कपट हैं या नहीं या हम केवल ऊपर ऊपर से दिखाते हैं। वह जानता है कि हम अपना बेहतरीन दे रहे हैं या हम केवल किफायत से देने की कोशिश कर रहे हैं। वह जानता है कि हम विश्वासी हैं या अविश्वासी।

सारांश। हमें इस बात में सावधान रहना चाहिए कि अय्यूब, मित्रों तथा एलीहू के भाषणों से शिक्षाएं न बना लें। जो कुछ उन्होंने कहा चाहे वह आम तौर पर सही है और उसे पवित्र शास्त्र के अन्य भागों से बल मिलता है। वास्तव में परमेश्वर धर्मी है, वह पक्षपात रहित है, और अंतरयामी है। हम कितने अद्‌भुत परमेश्वर की सेवा करते हैं!

डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 276. [2]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 624; और रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स,

1993), 332. [3]रेबर्न, 624. [4]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 450. [5]वहीं, 451. [6]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 292. [7]आल्डन, 335. [8]हार्टले, 454. [9]जे. एम. हेंसन, "वाचिंग यू," *साँग्स ऑफ़ द चर्च,* संस्क. ऐंड सम्पा. आल्डन एच. हॉवर्ड (वैसट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग, कं., 1977)। [10]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 448.

[11]आल्डन, 338. [12]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:765. [13]रोअले, 283. [14]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:560. [15]वहीं, 1:285–86. [16]हेले, 298. [17]वहीं, 299. [18]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:119. [19]आल्डन, 342.